International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(II), April - June, 2021, pp.93-96

कोरोना काल में संगीत और संगीतज्ञ

डॉ. वसुधा सक्सैना*

सार

कोरोना जनित काल में पूरी मानवीय सभ्यता समायोजित होने के प्रयास में प्रयत्नशील है । इस संकट के समाप्त होने के उपरान्त भी इसके अवशेष भय, व्याकुलता, घबराहट हमारे जीवन में शामिल होकर मनुष्य के सामाजिक जीवन में तोड़ फोड़ करते रहेगें। जीवन को सभ्रान्त बनाने के लिए सामाजिक जीवन के साथ शिक्षा अपनी मुख्य भूमिका रखती है और इस काल में शिक्षण पद्धति ने नई करवट ली है। शिक्षको ने कोरोना काल में मानवीय संवेदनो को सहेजतें हुए बच्चों, जो राष्ट्र की धरोहर होते है, को शिक्षा के माध्यम से सम्भाले रखने के लिए अथक प्रयास किया। वर्तमान में अधिकतर शिक्षक 45 वर्ष से ऊपर की आयु वाले डिजिटल माध्यमो का उपयोग करने में असमर्थ थे, उन्होने भी खुद को समयानुसार प्रासंगिक बनाकर शिक्षार्थियो को शिक्षा से वंचित नहीं होने दिया और निरन्तर स्वयं जूझते हुये भी शिक्षण कार्य जारी रखा। अतः सभी शिक्षक साधुवाद व नमन के पात्र है। वर्तमान में हम सर्वप्रथम संगीत शिक्षण की चर्चा करेगे। संगीत पूर्ण रूपेण गुरूमुखी शिक्षा है क्योंकि संगीत के शास्त्र पक्ष व क्रियात्मक दो प्रारूप है। संगीत के प्रदर्शन कला होने के कारण क्रियात्मक पक्ष ज्यादा प्रभावी है। प्रत्येक कला उस दौर के प्रभावो से अछूती नहीं रहती है और यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनो ही रूप से परिलक्षित होते है।

***कुंजीशब्द** : कोरोना, संगीत, डिजिटल माध्यम, शिक्षण पद्धति।*

प्रस्तावना

कोरोना काल में संगीत और संगीतज्ञ की सही व्याख्या करने के लिए संगीत को समझना होगा क्योंकि संगीत हर देश काल परिस्थितियों के अनुरूप अपने को बदलता गया और स्थापित होता गया। संगीत का मूल मंत्र सत्यम् शिवम् सुंदरम् है अर्थात् जो सत्य है वही कल्याण मय है और जो कल्याण मय है वही सुंदर है। भारत हो या विश्व कहीं पर विभिन्न धर्म, जाति सम्प्रदाय, प्रान्तीय भेद भाव वो या राष्ट्रीय वैमनस्य हो पर संगीत सदैव सत्यम् शिवम् सुंदरम् ही रहा है और रहेगा क्योंकि संगीत का एक पक्ष सदैव आध्यात्मवादि रहा है। भारत में भी मार्गी संगीत उसे कहा जाता है जो मोक्ष प्राप्ति में सहायक हो और देशी संगीत मनोरंजन करने वाला हो। आज के परिप्रेक्ष्य में मार्गी संगीत को हम शास्त्रीय व देशी संगीत को सुगम संगीत की संज्ञा में रख सकते हैं।

अतः संगीतज्ञों द्वारा व्यवहार में लाया जाने वाला संगीत को समझने के लिए संगीत की विकास यात्रा का अवलोकन करना होगा कि कैसे संगीत ईश्वर की अराधना से, मनोरंजन करने वाला बन गया। मनोरंजन करने से व्यवसायिकता के भाव का समावेश हुआ और व्यवसायिक होने पर दो धाराए हो गयी। एक धारा तो संगीत शिक्षण के क्षेत्र की हो गई तो दूसरी प्रर्दशन के व्यवसाय की किन्तु प्रशंसनीय स्थिति यह है कि संगीत नवीन नवीन आयायों में स्थापित हुआ और जनमानस को सहेजने, सवारने में सदैव अग्रणीय रहा। संगीत के इसी पक्ष को समझने के लिए संगीत के आरम्भ से वर्तमान तक की विकास यात्रा को समझना होगा।

संगीत का आरंभ व विकास

संगीत का आदि ग्रन्थ भरत मुनि कृत नाट्य शास्त्र ही है अतः हर व्याख्या के मूल में वहीं आधार रूप में स्थित रहता है। नाट्य शास्त्र में आचार्य भरत ने संगीत के उद्भव में ब्रह्मा के बाद शिव का उल्लेख किया। ऐसा माना जाता है कि संगीत ईसा से पूर्व भी अपनी उन्नत अवस्था में विद्यमान था। सिंधु सभ्यता में पायी जाने

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर, राजस्थान।

वाली मूर्तियां इत्यादि में वीणाएं, सप्तछिद्र युक्त वंशियां, मृदंग आदि चर्मवाद्य, करताल आदि से इस तथ्य की पुष्टि होती है। संगीतज्ञों में नटराज रूप सदैव पूज्यनीय रहा है। ऋग्वेद की सभ्यता ईसा से अनुमानतः ढाई हजार वर्ष पूर्व की मानी जाती है और ऋग्वेद की रिचाओं का स्वर, युक्त गान होता था। पापली के अनुसार ऋक गान स्वर शब्द संयोग का प्राचीनतम उदाहरण है। सामवेद में मानव उपयोगी रिचाओं को संकलन किया गया। वहाँ मुख्यतः तीन स्वर का गान था अतः संगीत का इतिहास विभिन्न काल–वैदिक काल, रामायण काल, महाभारत काल, पुराणों का काल, उपनिषद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, हर्षवर्धन युग का संगीत, राजपूत काल, तक कृमिक रूप से प्रवेश करता गया। तदोपरान्त संगीत काल 1000 से 1290 ईस्वी तक प्रवेशित मुस्लिम काल माना जाता है। खिलजी युग में संगीत पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस युग में कव्वाली वीणा के आधार पर सितार का निर्माण व प्रचार, मृदंग को काटकर तबले के दाएं व बाएं का निर्माण का जिक्र प्राप्त होता है।

मुगल काल सन् 1526 से 1707 तक का माना जाता है। मुगल काल का प्रारंभ बाबर से माना जाता है। इस काल में ख्याल, कव्वाली, गजल आदि गीत शैलियों का बहुलता से प्रयोग किया गया।

हुमायुँ दार्शनिक विचारों का राजा था उसे भारतीय संस्कृति से विशेष प्रेम था संगीतज्ञों को विशेष आदर की दृष्टि से देखता था। हुमायुँ ने संकट कालीन स्थिति में भी संगीत को नहीं त्यागा क्योंकि वो संगीत को उत्साह व प्रकाश जनक मानते थे। अलबरोदी के अनुसार– "यदि उसे अवकाश मिलता तो वह संगीत के क्षेत्र में अवश्य ही कोई महान कार्य करता। भजन इत्यादि का भी इस काल में खूब प्रचार व प्रसार हुआ। मुसलमान शासकों ने अपने अपने काल में संगीतज्ञों का राजदरबार में नियुक्त भी किया अकबर काल में महान संगीतज्ञ स्वामी हरिदास हुए जिन्होने अपनी एकाग्रता व प्रतिभा द्वारा संगीत में अलौकिक शक्तियों का सम्पादन किया। स्वामी हरिदास महान संगीत शिक्षक भी थे उनके परम शिष्य तानसेन व बैजू बावरा थे तानसेन तो अकबर के नवरत्नों में से एक रत्न थे। अकबर के बाद जहाँगीर, शाहजहाँ आदि ने संगीत प्रचार प्रसार किया औरंगजेब के अवसान के पश्चात् रामदास, तुकाराम, तुलसी, मीरा के भजन इत्यादि का खूब प्रचार हुआ। ब्रिटिश काल में संगीत सहानुभूति पूर्वक नहीं देखा गया जिससे इसके गुण व परिमाण में कमी आ गयी। बीस से तीस वर्षों तक संगीत की दशा शोचनीय स्थिति पर पहुँच गयी। जो राजा पहले संगीत से सहानुभूति रखते थे वे भी इसकी उपेक्षा करने लगे।

संगीतकारों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं हो रहा था संगीत कोठों पर संधारित होने लगा इस कारण यह हेय माना जाने लगे। संगीत की इस दुर्दशा से उबरने के लिए विष्णु द्वय जैसी महान शख्सियत ने संस्थागन शिक्षण का सूत्रपात किया। विष्णु दिगम्बर भातखण्डे और विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने सांगीतिक आन्दोलन की नींव रखी। पं. विष्णु दिगम्बर भातखण्डे जी ने और विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने संगीत को कोठों से निकाल सभ्रान्त परिवारों में पहुँचने के लिए कई संस्थाओं की नींव रखी। विष्णु द्वय जी ने भारत में मुख्यतः उत्तर प्रदेश को केन्द्र बिन्दु में रखकर वाराणसी, इलाहबाद, लखनऊ व कानपुर में संस्थागत शिक्षा की स्थापना के प्रयास मुख्य रूप से प्रारम्भ किए। यहाँ संगीत महाविद्यालयों की स्थापना की गई इनमें लखनऊ, ग्वालियर व बड़ौदा विशेष उल्लेखनीय है उधर विदेशी लेखकों में मि. डेनेलु का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने संगीत पर सुलझे हुए ग्रन्थों की रचना की जो उनके भारतीय संगीत को बड़ी निष्ठापूर्वक अपनाने का प्रतीक भी है स्वतन्त्रता पश्चात् भारत में प्रान्तीय और केन्द्रीय शासन का सम्बल संगीत को मिला। स्वतंत्रता के पाँच वर्ष पश्चात् राष्ट्र स्तर पर संगीत कलाकारों को सम्मानित भी किया गया। उसी समय केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की गई और इस अकादमी से सम्बन्ध प्रान्तीय अकादमियों की भी स्थापना हुई और आकाशवाणी, केंद्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान व सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय एवं अनेक शासकीय व अशासकीय संगठनों द्वारा भारतीय संगीत की भरपूर सेवा व उत्थान का कार्य किया गया तदोपरान्त राष्ट्रीय संगीत महोत्सव, नृत्य महोत्सव, संगीत विचारों पर संगोष्ठियाँ इत्यादि केंद्रीय व प्रान्तीय स्तर पर आयोजन होता गया और वो वर्तमान तक स्थापित है।

अतः संगीत की सभी विधाओ एवं शैलियों में वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन हुए हैं परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम है आधुनिक संगीत अपने नितांत परिवर्तन रूप में आज हमारे सामने है।

कोरोना

कोरोना एक ऐसी महामारी का नाम है जिसने विश्व को झकझोर कर रख दिया सर्वप्रथम चीन से शुरू होकर इसने पूरे विश्व को अपनी चपेट में लिया और अंत में भारत भी इस महामारी से अछूता नहीं रहा। इस बीमारी में व्यक्ति में लक्षण दिखते ही उसे 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन कर दिया जाता है क्वारंटाइन (संगरोध) अर्थात् सब इंसानों से दूर। दूरी व मास्क इस रोग की विशेष रोकथाम डब्लू.एच.ओ. द्वारा जारी की गई।

अतः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा तत्काल प्रभाव से 21 मार्च को जनता कर्फ्यू की घोषणा की गई और 22 मार्च से इस लॉकडाऊन की घोषणा ने संपूर्ण मानव सभ्यता को अचंम्भित कर दिया। जनमानस घर से बैठकर सभी कार्य चाहे वो राजकीय हो या सरकारी ऑनलाईन किए जाने लगे और जीवन निर्वाह करने की यही समय की माँग भी थी।

कोरोना जनित काल में पूरी मानवीय सभ्यता समायोजित होने के प्रयास में प्रयत्नशील है । इस संकट के समाप्त होने के उपरान्त भी इसके अवशेष भय, व्याकुलता, घबराहट हमारे जीवन में शामिल होकर मनुष्य के सामाजिक जीवन में तोड़ फोड़ करते रहेगें।

जीवन को सभ्रान्त बनाने के लिए सामाजिक जीवन के साथ शिक्षा अपनी मुख्य भूमिका रखती है और इस काल में शिक्षण पद्धति ने नई करवट ली है । शिक्षको ने कोरोना काल में मानवीय संवेदनो को सहेजतें हुए बच्चों, जो राष्ट्र की धरोहर होते है, को शिक्षा के माध्यम से सम्भाले रखने के लिए अथक प्रयास किया। वर्तमान में अधिकतर शिक्षक 45 वर्ष से ऊपर की आयु वाले डिजिटल माध्यमो का उपयोग करने में असमर्थ थे, उन्होने भी खुद को समयानुसार प्रासंगिक बनाकर शिक्षार्थियो को शिक्षा से वंचित नहीं होने दिया और निरन्तर स्वयं जूझते हुये भी शिक्षण कार्य जारी रखा। अतः सभी शिक्षक साधुवाद व नमन के पात्र है।

वर्तमान में हम सर्वप्रथम संगीत शिक्षण की चर्चा करेगे। संगीत पूर्ण रूपेण गुरूमुखी शिक्षा है क्योंकि संगीत के शास्त्र पक्ष व क्रियात्मक दो प्रारूप है। संगीत के प्रदर्शन कला होने के कारण क्रियात्मक पक्ष ज्यादा प्रभावी है। प्रत्येक कला उस दौर के प्रभावो से अछूती नहीं रहती है और यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनो ही रूप से परिलक्षित होते है।

सकारात्मक प्रभाव

कोरोना काल का सकारात्मक प्रभाव संगीत जगत के क्षेत्र में परिलक्षित होता है संगीत जगत चाहे व शास्त्रीय, उपशास्त्रीय या सुगम का क्षेत्र हो सभी में बढ़ चढ़ कर नित नए प्रयोग दिखायी दिए। संगीत जो पूर्णतया प्रदर्शन की कला है। कलाकार प्रदर्शन ना करे तो अवसाद का शिकार हो जाता है। कोरोना काल में संगीत भी पूर्णरूपेण डिजीटल हो गया और कलाकारों ने ऑनलाइन प्रदर्शन जारी रखा। शिक्षको ने ऑनलाइन वीडियो भेज कर या फिर गूगल मीट, जूम मीट पर शिक्षण कार्य जारी रखा। इसके अतिरिक्त संगीत पिपासु जो कार्य की व्यस्तता के कारण संगीत सीख नहीं पाते थे उन्होने भी खूब दिल लगाकर कोरोना काल में घर पर रहकर डिजीटली शिक्षा प्राप्त की। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी प्रतिभाए जो लुप्त हो रही थी , उन्होने भी ऑनलाइन होने वाली प्रतियोगिताओ इत्यादि में भाग लेकर अपने हुनर को तराशा और मानसिक अवसाद से दूर रहे। कुछ संस्थाए ऐसी भी हैं जिन्होंने ऐसे समय में भी कलाकारों की रिकार्डिंग को चलाया व कलाकारों को नित नए प्रयोग करते हुए प्रदर्शन का अवसर दिया। कुछ संस्थाओ ने कलाकारों की रिकार्डिंग सुनाने के लिए व्यवसाय के तौर पर ऑनलाइन टिकट भी रखा और उससे प्राप्त धनार्जन का कुछ प्रतिशत कलाकारों को भी दिया जिससे उनका जीवकोपार्जन होता रहा इस तरह सहभागिता की भावना विकसित हुई। साथ ही कुछ जगह चिकित्सकों ने कोविड मरीजों को क्वारनटाईन में उनको संगीत सुनवाया जिससे उनका अकेलापन दूर होने के साथ संगीत के प्रभाव से दवाईयों ने भी शीघ्र अपना असर दिखा उन्हें शीघ्र स्वस्थ करने में असरदार प्रभाव छोड़ा।

नकारात्मक प्रभाव

कोरोना काल में डिजिटल वायरस ने संगीत को भी संक्रमित कर दिया है और संक्रमण पश्चात् कुछ नकारात्मक प्रभाव निम्न लिखित क्षेत्रों में परिलक्षित हुए।

शिक्षा के क्षेत्र में

संगीत पूर्णरूपेण गुरू शिष्य परम्परा से जुड़ा हुआ विषय है। शिष्य वास्तविक शिक्षा गुरू के सानिध्य में रहकर ही सीख पाता है। ऑनलाइन शिक्षण संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्यो का सामंजस्य सीखना नामुमकिन है साथ ही अपने वाद्यो को मिलाने की तकनीकि की बारीकियों को भी वो ऑनलाइन नही सीख सकता। ऑनलाइन में वो भौतिकी ज्ञान तो प्राप्त कर सकता है किन्तु स्वर के साथ का आत्मीय भाव गुरू के सानिध्य में ही समझ में आता है। संगीत में शिक्षा ताल व लय बद्ध होती है। शिक्षण में गुरू ताल समझाता है तो विद्यार्थी तक के बीट कुछ सेकण्ड्स पश्चात् पहुँचती है इस कारण समझाना पाना दुष्कर है।

व्यवसाय के क्षेत्र में

भारत में संगीत मनोरंजन का साधन मात्र ही नहीं है अपितु रोजगार परक भी है। कोरोना काल का सबसे संवेदन शील प्रभाव मेरी राय में संगीत के व्यवसायिक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है। कोरोना काल में ऑनलाइन कार्यक्रम तो हुए उसमें संगीत कलाकारों को फांके की नौबत आ गयी। ई तबला, ई सितार, ई तानपुरा, इत्यादि ने कला के प्रदर्शन स्तर को तो कम किया साथ ही काम चलाने की प्रवृत्ति को विकसित कर दिया और इस प्रवृत्ति से कला की सम्पूर्णता के भाव में कमी आयी। विद्यार्थी संगत के महत्व को समझने से महरूम रह गये। सामाजिक कार्यक्रम पूर्णतः बन्द हो गये। ऐसे कार्यक्रमों से एक कलाकार के साथ ना जाने कितने लोग जुड़े होते है। ऑडिटोरियम बंद हो गये। ऑडियो, अरेन्जर, माईक इत्यादि की व्यवस्था करते थे उनके रोजगार समाप्त हो गये। इन सभी को अन्य व्यवसाय जैसे चाय की थड़ी, मजदूरी इत्यादि कार्य के लिए उन्मुख होना पड़ा। संगीत के व्यवसायिक क्षेत्र में त्राहि माम की स्थिति हो गई। दृढ़ इच्छा शक्ति कलाकार तो उबरने लग गए है किन्तु कमजोर भावनाओ वाले अवसाद में आकर खुद को समाप्त तक करने की कगार पर पहुँच गए।

अतः वर्तमान में कोरोना के सकारात्मक व नकारात्मक प्रयासो का मुल्यांकन करते हुए भविष्य में पदार्पण करना होगा। जितना आवश्यक हो वो कार्यक्रम हो किन्तु अनावश्यक व्यय समाप्त हो। ऑनलाइन यदि कार्यक्रम हो तो मुख्य कलाकार के साथ सभी संगत कलाकार जीवन्त ही गाए बजाए ऐसी आयोजको की शर्त का नियम बनाना चाहिए। ऐसा प्रयोगो द्वारा सामाजिक कार्यक्रम के साथ साथ हम ऑनलाइन कार्यक्रम भी जारी रख सकते है और अधिक मात्रा में आयोजित भी कर सकते है जो व्यवसायिक दृष्टि से अधिक लाभप्रद होगा। अतः सरकार को वा संगीत जगत को संगीत के उत्थान हेतु ठोस पहल करने की आवश्यकता है।

❖◆❖